स्नातक (प्रतिष्ठा)
तृतीय खण्ड
पत्र - सप्तम (VII)

डा० राज कुमार राय
सहायक प्राचार्य
मैथिली विभाग
बि० बि० जनता महाविद्यालय, राजनगर

रसक परिभाषा आ

'रस' ककरा कहल जाइत अछि। ओकरा परिभाषित करू

'रस' भारतीय वाङ्मयक एक टा अत्यन्त प्राचीन शब्द अछि। काव्यशास्त्रमे 'रस' अलौकिक एवं चमत्कारी ओहि आनन्द विशेषक बोधक अछि जकर अनुभूति सहृदयक हृदयकेँ द्रुत, मनकेँ तन्मय नेत्रकेँ जलपूर्ण, शरीरकेँ पुलकित एवं वचन रचनाकेँ गद्गद् करबाक क्षमता रखैत अछि। इएह आनन्द काव्यक उपादेयता अछि एवं एकरे जागृत वाङ्मयक अन्य प्रकारेँ सभसँ विलक्षण काव्य नामक पदार्थक प्राण प्रतिष्ठा करैत अछि। जाहि प्रकारेँ आत्मज्ञानी स्वरूप परमात्माक साक्षात्कारसँ कृत-कृत भए आनन्द विभोर भ' जाइत छथि ठीक ओहि प्रकारे काव्य मर्मज्ञ सहृदय रसिक काव्य रसक आस्वादन क आनन्द विभोर भए जाइत छथि।

बृहदारण्यक उपनिषद्मे कहल गेल

Scanned with CamSc

अछि जे मानवकें मात्र आत्माक दर्शन, श्रवण, मनन आदी करबाक चाही कारण एकर आत्माक दर्शन आदि भेला पर अन्य सब किछु ज्ञात भऽ जाइत अछि। ओहिना काव्यशास्त्रमे सेहो रसकें काव्यकें आत्मा मानल गेल अछि तथा कहल गेल अछि जे एहि काव्यात्माक ज्ञान भेला पर गुण, अलंकार आदिक वास्तविक रूप ज्ञात भऽ जाइत अछि।

भारतीय काव्यशास्त्रमे रसक सर्वप्रथम विवेचन आचार्य भरतमुनि द्वारा भेल अछि। ई अपन प्रसिद्ध ग्रन्थ नाट्यशास्त्रमे स्पष्ट रूपें कहने छथि -

<u>नहि रसादृते कश्चिदर्थः प्रवर्तते।</u>

अर्थात रसक अभावमे कोनो अर्थक आविर्भूत होयब सम्भव नहि अछि। तात्पर्य जे रससँ रहित कोनो उक्ति काव्यमय नहि भऽ सकैछ। अर्थात रसक उक्तिए काव्यक परिधिमे आबि सकैत अछि, अन्य नहि।

काव्य मीमांसाकार आचार्य राजशेखर सेहो अपन पूर्ववर्ती आचार्यक सदृश शब्दार्थकें काव्यक शरीर मानलनि तथा रसकें ओकर

Scanned with CamSc

ओकर आत्मा -

शब्दार्थो ते शरीरं रस आत्मा।

आचार्य मम्मट सेहो यद्यपि काव्य लक्षणमे रसक नाम नहि लेलनि किन्तु काव्यक सगुणता एवं अलंकार ताके प्रकारान्तरसँ रसेक समर्थन कयलनि। आचार्य विश्वनाथ त स्पष्टतः रसात्मक वाक्यकेँ काव्य मानैत छथि -

वाक्यं रसात्मकं काव्यम्।

निष्कर्षतः ई जे प्रायः समस्त संस्कृत आचार्यलोकनिक ई मान्यता छनि जे रसहीन काव्य आत्मारहित शव एवं नीर रहित तटिनी जकाँ होइत अछि।

सन्दर्भ ग्रंथ - मैथिली काव्य शास्त्र - डॉ॰ दिनेश कुमार झा

Scanned with CamSc